प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
सत्र 29: शिष्य का मानक: उत्कृष्टता (12a)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **मत्ती 5:46-48**
46 क्योंकि यदि तुम उन लोगों से प्रेम करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो तुम्हें क्या पुरस्कार मिलेगा?
क्या टैक्स वसूलने वाले भी ऐसा नहीं करते?
47 और यदि तुम केवल अपने भाइयों को अभिवादन करते हो, तो तुम दूसरों से अधिक क्या कर रहे हो?
क्या गैर-यहूदी भी ऐसा नहीं करते?
48 इसलिए तुम्हें पूर्ण होना चाहिए, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता पूर्ण है।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* - **मत्ती 5**
लिंक: https://www.biblegateway.com/passage/?search=Matthew%205&version=ESV

***चरण 4**: व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:*

एक. यीशु आंतरिक स्वभाव के 5 क्षेत्रों में उत्कृष्टता की मांग करते हैं: भाषण, आचरण, प्रेम, विश्वास और पवित्रता। क्या आप अपने और अपने प्रशिक्षुओं के साथ भी ऐसा करने के लिए तैयार हैं?

दो. क्या आप समझते हैं कि इन ऊँची माँगों को पूरा करने का एकमात्र तरीका है कि आप में मसीह का होना चाहिए? ये परमेश्वर के अनुग्रह और दया के उपहार हैं।

तीन. अगर हिलाया जाए या परीक्षण किया जाए तो असली व्यक्ति सामने आ जाता है। बस देखें कि जब कोई आपकी पार्किंग जगह चुराता है या ट्रैफिक में आपको काट देता है तो क्या होता है।

चार. ध्यान दें कि फिलिप्स फिर से कहते हैं कि शिष्यत्व किसी अन्य व्यक्ति में आपके जीवन में मसीह की भागीदारी के अपने अनुभव को पुनः उत्पन्न करना है। क्या आप किसी को शिष्य बनाना सिखा सकते हैं यदि आप स्वयं शिष्य नहीं बने हैं?

पाँच. **भाषण**: परमेश्वर आपसे एक प्रशिक्षक के रूप में अपनी जीभ को नियंत्रित करने की अपेक्षा क्यों करता है? (याकूब 3:2)

***चरण 5**: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
अध्याय 12a लेखक के अनुसार – कीथ फिलिप्स:

शिष्य का मानक: उत्कृष्टता

मसीह की शिक्षाओं की विभिन्न व्याख्याओं को आदर्शवादी नैतिकता से लेकर कानूनी आदेशों तक के रूप में व्याख्यायित किया गया है। लेकिन चाहे अन्य लोग उनकी शिक्षाओं को कैसे भी समझें, हमारे प्रभु के जीवन का अध्ययन स्पष्ट रूप से दिखाता है कि वे अपने शिष्यों से वही करने की उम्मीद करते थे जो उन्होंने उन्हें सिखाया। यीशु ने अपने शिष्यों द्वारा किए गए सभी कार्यों में उत्कृष्टता की मांग की। माउंट उपदेश में उनका मुख्य जोर, जैसे उनकी सभी शिक्षाओं के साथ, धार्मिकता पर था—वह आंतरिक चरित्र जो बाहरी आचरण के पीछे है। उन्होंने अपने शिष्यों को सिखाया कि "जैसे आपका स्वर्गीय पिता पूर्ण है, वैसे ही पूर्ण रहें" (मत्ती 5:48)। बोने वाले के दृष्टांत में, यीशु ने अपनी इच्छा प्रकट की कि फल पूर्णता तक पहुंचाए जाएं (लूका 8:4-15)। भीड़ के उनके जीवन और मंत्रालय के मूल्यांकन ने मसीह की उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि की: "... उन्होंने सब कुछ अच्छा किया है..." (मरकुस 7:37)। परमेश्वर उत्कृष्ट हैं और जो कुछ भी वे करते हैं वह उत्कृष्ट है (भजन संहिता 119:68)। आपके शिष्य को यह समझना चाहिए कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसका संपूर्ण अस्तित्व अपने पिता की उत्कृष्टता को प्रतिबिंबित करना चाहिए। परमेश्वर उससे "हर अच्छे कार्य में पूर्ण..." होने की अपेक्षा करता है। (इब्रानियों 13:21 KJV)।

यदि कोई व्यक्ति मानता है कि यह अपेक्षित प्रदर्शन स्तर उसकी क्षमताओं से कहीं अधिक है, तो वह हतोत्साहित हो सकता है। फिर भी परमेश्वर के अनुग्रह और शक्ति के उपहार उसकी मांगों के साथ हैं। क्योंकि मसीह आप में हैं (कुलुस्सियों 1:27), धार्मिकता प्राप्त की जा सकती है।

एक ठंडी सुबह मैं ऑफिस जाते हुए एक कप गर्म कॉफी भी साथ ले गया। मैंने बिना एक बूंद गिराए सफलतापूर्वक फ्रीवे पर रास्ता बना लिया था। अचानक, मेरे सामने वाले ड्राइवर ने ब्रेक जोर से लगा दिए। मैंने दुर्घटना से बचने के लिए कार घुमाई। कॉफी ने मेरे हाथ को जला दिया और मेरी कार के अंदरूनी हिस्से को फिर से सजाया। कॉफी कप से क्यों निकली? क्योंकि मेरे सामने वाला आदमी मुझे हाथ झटकने के लिए मजबूर कर रहा था? नहीं! कॉफी कप से बाहर गिर गई क्योंकि कॉफी कप में थी। जो कुछ भी उस कप में था, वह हिलाने पर बाहर आ जाता। हमारे व्यवहार के साथ भी यही सच है। जब हम हिलते हैं, तो असली व्यक्ति बाहर आता है। अगर कोई दूसरा मोटर चालक आपकी पार्किंग जगह लेता है और आपकी प्रतिक्रिया गाली देने की होती है, तो क्या आप तर्क देंगे, "अगर वह ड्राइवर मेरी जगह नहीं लेता, तो मैं कसम नहीं खाता"? शिष्य जानता है कि यदि शत्रुता और घृणित भाषा अंदर न होती, तो शब्द बाहर नहीं आते। यदि कोई कम कपड़े पहने लड़की गुजरे और आप वासना करें, तो क्या आप कहेंगे, "अगर वह वहाँ नहीं होती, तो मैं वासना नहीं करता"? शिष्य जानता है कि यदि अंदर कोई वासना नहीं होती, तो वह वासना नहीं करता। यदि मसीह आपके अंदर हैं जब आप हिल रहे हैं, तो धार्मिकता प्रकट होगी (रोमियों 8:10)। शिष्यत्व किसी और में आपके जीवन में मसीह की भागीदारी के अनुभव को दोहराना है। दूसरों को एक धार्मिक चरित्र प्रदान करने के लिए, आपके शिष्य को परमेश्वर के उत्कृष्टता के मानक को समझना और उसके लिए प्रयास करना चाहिए। पौलुस ने तीमुथियुस के लिए उन पांच क्षेत्रों को पहचाना जो यह दर्शाते हैं कि कोई शिष्य अपने परमेश्वर और पिता को सही ढंग से प्रतिबिंबित कर रहा है या नहीं। पौलुस ने लिखा, "कोई भी तुम्हारी युवावस्था को नीचा न दिखाए, बल्कि भाषण, आचरण, प्रेम, विश्वास और पवित्रता में अपने आप को उन लोगों का उदाहरण दिखाए जो विश्वास करते हैं" (1 तीमुथियुस 4:12)।

भाषण

आपके शिष्य का भाषण उसके आध्यात्मिक स्वास्थ्य का सटीक मापक है क्योंकि यह उसके चरित्र को दर्शाता है। "यदि कोई खुद को धार्मिक समझता है, फिर भी अपनी जीभ को नियंत्रित नहीं करता बल्कि अपने हृदय को धोखा देता है, तो उस व्यक्ति का धर्म व्यर्थ है" (याकूब 1:26)। एक सुबह मैं एक पादरी से उसके कार्यालय की निजता में बात कर रहा था। मेरी आश्चर्य की बात यह थी कि उसने एक गंदी चुटकुला सुनाई, जिसमें गंदी भाषा भी थी। बिना सोचे, इस व्यक्ति के प्रति मेरा सम्मान गिर गया। स्वाभाविक रूप से मुझे पता था कि उसके शब्द उसके हृदय को दर्शाते हैं, और यह व्यक्ति अशुद्धता और अपरिपक्वता से जूझ रहा था। लूका 6:45 सिखाता है कि "... उसका मुँह उस बात से बोलता है जो उसके हृदय को भरता है।" एक शुद्ध हृदय सही विचार उत्पन्न करता है जो हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से बोलने में सक्षम बनाता है। परमेश्वर चाहता है कि आपका शिष्य अपनी जीभ को नियंत्रित करे। "... यदि कोई अपनी बात में ठोकर नहीं खाता, तो वह एक पूर्ण [या परिपक्व] मनुष्य है, जो पूरे शरीर को भी नियंत्रित कर सकता है" (याकूब 3:2)।

जेम्स घुड़सवारी का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि यदि कोई एक छोटे, दिखने में महत्वहीन हिस्से पर शासन करने में विफल रहता है, तो वह पूरे हिस्से पर नियंत्रण खो देता है। एक कुशल घुड़सवार जानता है कि अपने घोड़े को कब और कैसे नियंत्रित करना है, बिट पर दबाव डालकर। लेकिन जो सवार लगाम छोड़ देता है, वह असहाय रूप से नियंत्रण से बाहर होता है। एक ईसाई जो अपनी जीभ पर नियंत्रण नहीं रखता है, गंभीर खतरे में होता है: जीभ "पूरे व्यक्ति को भ्रष्ट कर देती है, उसके पूरे जीवन को आग लगा देती है, और खुद नरक से आग लगा देती है" (याकूब 3:6 NIV)। एक अनियंत्रित जीभ घमंड के माध्यम से गर्व व्यक्त करती है; यह असंगत कहानियों, नकारात्मक हास्य या जातीय अपशब्दों के माध्यम से नैतिक बुराई को भड़काती है; यह पाखंडी रूप से परमेश्वर को आशीर्वाद देती है जबकि यह मनुष्य, परमेश्वर की सृष्टि को शाप देती है। भजन संहिता 34:13 सलाह देता है, "अपनी जीभ को बुराई से दूर रखो, और अपने होंठों को धोखा देने से रोको।" लेकिन याकूब 3:8 चेतावनी देता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी जीभ को नियंत्रित नहीं कर सकता। हालांकि, पवित्र आत्मा आपके शिष्य की जीभ को वश में कर सकता है ताकि वह जो भी शब्द बोले, वह परमेश्वर का सम्मान करे और दूसरों का निर्माण करे। रोमियों 14:19 हमें प्रोत्साहित करता है कि "उन चीजों का पीछा करें जो ... एक-दूसरे के निर्माण को जन्म देती हैं।" ईमानदारी हमेशा शिक्षाप्रद नहीं होती। सत्य अत्यंत विनाशकारी हो सकता है। आपका शिष्य आत्मा के मार्गदर्शन पर भारी निर्भर होगा ताकि वह लगातार दूसरों का निर्माण कर सके

बिना सत्य से समझौता किए। उसे दूसरों को सुधारना होगा बिना उनकी सीखने की इच्छा को कमजोर किए। उसे उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने के लिए कहा जाएगा बिना प्रयास करने की प्रेरणा को बाधित किए। उससे अपेक्षा की जाएगी कि वह सहानुभूतिपूर्वक दूसरों के बोझ उठाए, बिना आत्म-दया बढ़ाए। दूसरों में उसके निवेश की प्रभावशीलता मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करेगी कि वह प्रेम में सत्य बोलने की क्षमता रखता है। "... प्रेम को बढ़ावा देता है" (1 कुरिन्थियों 8:1)।

आप और आपके शिष्य को प्रार्थना करनी चाहिए: "मेरे मुख के शब्द और मेरे हृदय का ध्यान तेरी दृष्टि में स्वीकार्य हो, हे प्रभु, मेरे चट्टान और मेरे उद्धारकर्ता" (भजन संहिता 19:14)।

आचरण
आपके शिष्य का व्यवहार उस मसीह के प्रति सम्मान उत्पन्न करना चाहिए जो उसमें है। उसे "शारीरिक कामों से दूर रहने" और अपने "व्यवहार को उत्कृष्ट" रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया है (1 पतरस 2:11,12)। उसकी प्रेमपूर्ण चिंता और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता लोगों को मसीह की ओर आकर्षित करेगी (1 कुरिन्थियों 9:19-23)। यह केवल तब हो सकता है जब वह "नए स्व को धारण करता है, जो परमेश्वर के समान धार्मिकता और पवित्रता में बनाया गया है..." (इफिसियों 4:24)। अपने शिष्य में उत्कृष्टता विकसित करने के लिए, आपको उसे उसकी प्राथमिकताओं के अनुसार जीने में मदद करनी होगी। उसे उन अच्छी चीजों को ना कहना चाहिए जो उसके उद्देश्य और उद्देश्यों में फिट नहीं होतीं, जो उसके शिष्य बनाने के लक्ष्य में मदद नहीं करतीं। शैतान अक्सर अवसरों की प्रचुरता को एक चाल के रूप में उपयोग करता है, यह जानते हुए कि यदि आपका शिष्य बहुत अधिक प्रयास करता है, तो औसत दर्जे की स्थिति सभी की विशेषता बन जाएगी। लक्ष्य पर नजर रखना उसे सब कुछ अच्छी तरह करने पर ध्यान केंद्रित करने देगा।

पृष्ठ 135-138

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करे।*

स्रोत: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशक: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) पुस्तक से बिना संशोधन के ली गई है।

संशोधित 20261123